इस्लाम का जीवन-व्यवस्था

Islam Ka Nizam-e-Hayat

मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी

हिंदी अनुवाद — इस्लामी नैतिकता और सामाजिक जीवन पर चार निबंध

निबंध एक

इस्लाम का नैतिक दृष्टिकोण

(Islam Ka Akhlaqi Nuqta-e-Nazar)

सामान्य परिस्थितियों में, जब जीवन की नदी शांत गति से बहती है, मनुष्य एक प्रकार की संतुष्टि महसूस करता है — क्योंकि इसकी स्वच्छ, पारदर्शी सतह के नीचे एक पर्दा होता है, जिसके नीचे छिपी गंदगी और अशुद्धियाँ दबी रहती हैं, और कोई भी उन्हें खोजने और जाँचने की ज़रूरत महसूस नहीं करता। लेकिन जब उस नदी पर तूफान उठता है और लहरें उछलने लगती हैं, तो सारी छिपी गंदगी और अशुद्धियाँ ऊपर आ जाती हैं और पूरी सतह पर फैल जाती हैं। हर दर्शक उन्हें खुली आँखों से देख सकता है, और तब महसूस होता है — बल्कि विवशता होती है — कि जीवन की नदी अपने अंदर क्या लेकर चल रही है, यह स्पष्टतः देखा जाए, और इसे शुद्ध करने तथा स्वच्छ रखने का कोई उपाय खोजा जाए।

यही वह युग है जिससे हम आज गुज़र रहे हैं। हम असाधारण रूप से अस्वाभाविक समय में जी रहे हैं। इस समय जीवन एक अत्यंत तीव्र संघर्ष की गिरफ्त में है। यह संघर्ष इतना व्यापक हो गया है कि लोगों के सबसे बड़े समूह — उनके पूरे राष्ट्र — ने अपनी सबसे बुरी नैतिक विशेषताओं को सबके सामने उजागर कर दिया है। अन्याय, क्रूरता, उत्पीड़न, धोखा, विश्वासघात, बेईमानी, स्वार्थ, सत्ता की लालसा, और लोभ — ये केवल व्यक्तिगत अपराध नहीं हैं; ये पूरे राष्ट्रों के सामूहिक नैतिक चरित्र के रूप में प्रकट हो रहे हैं।

विरोधी राष्ट्र इन झूठों को उजागर करने वाली किताबें और पम्फलेट खुलेआम प्रकाशित करता है और रेडियो पर प्रसारित करता है। इन सभी माध्यमों से छोटे-छोटे दुष्टों ने पूरे वातावरण को प्रदूषित कर दिया है। सेनाओं का रूपांतरण हो गया है। हर सेना — जब वह आत्मघाती हो जाती है — अपनी निंदा स्वयं अपने ऊपर ले आती है। इन सबके बीच 'न्याय' का अर्थ यह है कि एक राष्ट्र दूसरों से ले सकता है, लेकिन दूसरे उससे वही माँगें तो यह अस्वीकार्य है। बीमारी इस हद तक बढ़ गई है कि एक राष्ट्र दूसरे पर भरोसा नहीं करता।

हम ऐसे युग में जी रहे हैं। यह नैतिक भ्रष्टाचार ठीक उन्हीं अवधारणाओं से उत्पन्न हो रहा है जो आज दुनिया में हर जगह प्रचलित हैं।

नैतिक अवधारणाओं की दो श्रेणियाँ

दुनिया की नैतिक अवधारणाएँ क्या हैं? जब हम इस प्रश्न की जाँच करते हैं, तो पता चलता है कि मूल रूप से दुनिया की सभी नैतिक अवधारणाएँ दो व्यापक श्रेणियों में विभाजित हैं:

1. पहली श्रेणी — वे अवधारणाएँ जो ईश्वर और परलोक में विश्वास पर आधारित हैं।
2. दूसरी श्रेणी — वे अवधारणाएँ जो ईश्वर और परलोक में विश्वास को नकारने की नींव पर बनी हैं।

आइए दोनों श्रेणियों की जाँच करें कि वे इस समय दुनिया में किस रूप में हैं और उनके क्या परिणाम निकलते हैं।

आज दुनिया में ईश्वर-विश्वास की स्थिति

ईश्वर और परलोक में विश्वास पर आधारित सभी नैतिक अवधारणाओं का समग्र स्वरूप पूरी तरह इस बात पर निर्भर है कि ईश्वर और परलोक के बारे में कौन सा विश्वास रखा जाए। इस समय जो अधिकांश लोग ईश्वर में विश्वास रखते हैं, उन्होंने सामान्यतः अपने जीवन पर उसके अधिकार को विभाजित करके विभिन्न देवताओं में बाँट दिया है। वे इन देवताओं को जैसे चाहें वैसे इस्तेमाल करते हैं — जब चाहें पूजा करते हैं, जब चाहें पाप करते हैं, और जब चाहें क्षमा माँगते हैं।

इस बहुदेवतावादी विश्वास ने सभी नैतिक नींवों को खोखला कर दिया है। धर्म-ग्रंथ मौजूद हैं; उनका सम्मानपूर्वक उल्लेख जुबान से होता है; लेकिन व्यावहारिक रूप से उनका पालन नहीं होता — क्योंकि बहुदेवतावाद ने एक छद्म रास्ता खोल दिया है जिससे लोग मानते हैं कि अंत में किसी की मध्यस्थता से मोक्ष मिल जाएगा।

गैर-धार्मिक नैतिक दर्शनशास्त्र और उनकी विफलताएँ

नैतिकता के दर्शनशास्त्र का पहला मूलभूत प्रश्न यह है: मानव जीवन का अच्छा और लक्ष्य क्या है, और मानव आचरण के लिए कौन सा मानक निर्धारित किया जाए? किसी एक मनुष्य के पास इसका एक ही उत्तर नहीं है। एक वर्ग के लिए भलाई सुख है। दूसरे के लिए यह पूर्णता है। तीसरे के लिए यह कर्तव्य है। फिर सुख के बारे में प्रश्न उठते हैं: क्या यह शारीरिक और मानसिक इच्छाओं को पूरा करने से मिलता है? या भौतिक प्रगति की सीढ़ियाँ चढ़ने से? या किसी की कला या आध्यात्मिक व्यक्तित्व के पोषण से? प्रतिस्पर्धी उत्तर बेअंत गुणित होते हैं, कोई अंतिम समाधान नहीं।

दूसरा मूलभूत प्रश्न: भलाई और बुराई के ज्ञान का स्रोत क्या है? हमें कैसे पता चलता है कि क्या सही है और क्या गलत? कुछ कहते हैं मानवीय अनुभव। कुछ कहते हैं प्रकृति के नियम। कुछ कहते हैं विवेक। लेकिन जब कोई शोधकर्ता इसे ध्यान से देखता है, तो सारी उँगलियाँ एक ही दिशा में इशारा करती दिखती हैं।

तीसरा मूलभूत प्रश्न: नैतिकता के नियम के पीछे कौन सी शक्ति है? कोई कहता है आंतरिक सुख। कोई कहता है सामाजिक दबाव। लेकिन अधिकांश लोगों के लिए ये पर्याप्त प्रेरणादायी शक्तियाँ नहीं हैं। इन सभी उत्तरों से एक महत्वपूर्ण रिक्तता उजागर होती है: तीनों मूलभूत प्रश्नों के व्यापक, आधिकारिक और विश्वसनीय उत्तरों के बिना, नैतिक व्यवस्थाएँ अधूरी, मनमानी और अंततः सभ्यता को एक साथ रखने में असमर्थ रहती हैं।

इस्लाम का संपूर्ण उत्तर

मैं अपनी खुद की खोज और जाँच के माध्यम से इस निष्कर्ष पर पहुँचा: नैतिकता की केवल एक ही ध्वनि और सही नींव है, और वह नींव है — इस्लाम।

ईश्वर के प्रश्न पर इस्लाम का उत्तर है: इस ब्रह्मांड का एक ईश्वर है और उसी ने इसे बनाया है। वह इसका एकमात्र स्वामी है — निर्माता, पालनकर्ता, मालिक, और शासक। उसकी दिव्यता में कोई भागीदार नहीं है। उसके यहाँ किसी की सिफारिश कारगर नहीं होती। प्रत्येक व्यक्ति का अपना हिसाब है। कोई किसी के पाप का बोझ नहीं उठा सकता। ईश्वर सर्वज्ञ है — वह छिपे और प्रकट सब कुछ देखता है। ईश्वर न्यायी है — पूर्ण न्याय, निष्पक्षता और समता के साथ। पुरस्कार और दंड का आधार जाति, राष्ट्र, रंग, या जन्म नहीं होगा — आधार होंगे कर्म और चरित्र।

इस एकल, सुसंगत विश्वदृष्टि के साथ नैतिक दर्शनशास्त्र के तीनों मूलभूत प्रश्न एक साथ और पूरी तरह हल हो जाते हैं। भलाई और बुराई का मानक ईश्वर की प्रसन्नता है — एक निश्चित, सार्वभौमिक, स्पष्ट मानक। नैतिक ज्ञान का स्रोत दिव्य प्रकाशना है जो मानवीय तर्क, अनुभव और विवेक के साथ मिलकर एक दिशा में इशारा करता है। नैतिक नियम के पीछे की शक्ति ईश्वर का भय, उसकी प्रसन्नता की आशा, और परलोक में अंतिम जवाबदेही है।

इस्लामी नैतिकता की तीन विशेष विशेषताएँ

पहली विशेषता: इस्लाम नैतिकता के लिए एक उच्च और असीमित मानक — ईश्वरीय प्रसन्नता — प्रदान करता है जो नैतिक प्रगति की कोई सीमा नहीं रखता। यह नैतिक चरित्र को स्थिरता और स्थायित्व देता है और नैतिक ज्ञान के लिए एक एकल आधिकारिक स्रोत स्थापित करता है।

दूसरी विशेषता: इस्लाम आंशिक या टुकड़े-टुकड़े नैतिक आदेश नहीं देता। यह सभी नैतिक गुणों को एक संपूर्ण प्रणाली के रूप में स्वीकार करता है और उन्हें जीवन के सभी क्षेत्रों में संतुलित रूप से लागू करता है।

तीसरी विशेषता: इस्लाम मानवता से ऐसे सामाजिक जीवन की माँग करता है जो भलाई पर आधारित हो और बुराई से मुक्त हो। इसने मुस्लिम उम्मत का गठन किया और उसे यह एकमात्र उद्देश्य दिया।

निबंध दो

इस्लाम की नैतिक व्यवस्था

(Islam Ka Akhlaqi Nizam)

मनुष्य के अंदर एक प्राकृतिक नैतिक भावना है — एक सहज प्रवृत्ति जो उसे कुछ गुणों की ओर खींचती है और कुछ से दूर करती है। इस सहज भावना ने सामूहिक रूप से मानवता के लिए यह निर्धारित किया है कि कुछ गुण हमेशा अच्छे होते हैं और अन्य हमेशा बुरे। सत्यता, न्याय, वादे और अमानतें निभाना — इन्हें हमेशा पुण्य माना जाता रहा है। झूठ, अन्याय, विश्वासघात, बेईमानी, स्वार्थ, कायरता, और कंजूसी — इन्हें हमेशा घृणा की दृष्टि से देखा गया है।

इससे पता चलता है कि नैतिक वास्तविकताएँ जिन्हें मानवता जानती और मानती है, वे वास्तविक सार्वभौमिक सत्य हैं। भलाई कोई छिपी चीज़ नहीं — मानवता को केवल उसे पहचानना होता है। यह मानव प्रकृति में एक सहज दायित्व के रूप में विद्यमान है। यही कारण है कि कुरआन भलाई के लिए 'मारूफ' (पहचाना गया अच्छा) और बुराई के लिए 'मुनकर' (अस्वीकृत बुरा) शब्दों का प्रयोग करता है।

अलग-अलग नैतिक व्यवस्थाएँ क्यों?

यदि भलाई और बुराई सार्वभौमिक रूप से पहचानी जाने वाली चीज़ें हैं, तो इतनी अलग-अलग नैतिक व्यवस्थाएँ क्यों हैं? उत्तर यह है: अंतर व्यक्तिगत गुणों की पहचान में नहीं बल्कि उनके अनुपात, दायरे, उद्देश्य और तीन प्रश्नों के उत्तरों में है: जीवन का मानक और लक्ष्य क्या है? नैतिक ज्ञान का स्रोत क्या है? नैतिक नियम के पीछे कौन सी शक्ति है?

इस्लाम इन तीनों प्रश्नों का उत्तर देता है: ब्रह्मांड का एक ईश्वर है। वही इसे बनाता, मालिक है, और नियंत्रित करता है। मनुष्य उसका बनाया हुआ बंदा है। मनुष्य का काम अपने निर्माता की पूजा करना और उसकी आज्ञा मानना है। मनुष्य का अंतिम उत्तर इस दुनिया में नहीं बल्कि परलोक में है।

इस्लामी नैतिक व्यवस्था की तीन विशेषताएँ

पहली विशेषता: इस्लाम नैतिकता को एक उच्च उद्देश्य देता है — ईश्वरीय प्रसन्नता — जो नैतिक उत्थान की कोई सीमा नहीं रखता, नैतिकता को स्थिरता और स्थायित्व देता है, एक विश्वसनीय नैतिक अधिकार स्रोत स्थापित करता है, और ईश्वर का भय तथा परलोक का विश्वास स्वैच्छिक नैतिक अनुपालन के लिए सबसे शक्तिशाली प्रेरणादायी शक्ति उत्पन्न करता है।

दूसरी विशेषता: इस्लाम आंशिक नैतिकता की माँग नहीं करता। यह सभी नैतिक गुणों को एक संपूर्ण प्रणाली के रूप में स्वीकार करता है — उन्हें संतुलित और सुसंगत रूप से जीवन के सभी क्षेत्रों में लागू करता है।

तीसरी विशेषता: इस्लाम मानवता से ऐसे सामाजिक जीवन की माँग करता है जो भलाई पर निर्मित हो और बुराई से शुद्ध हो। इसने मुस्लिम उम्मत बनाई और इसका एकमात्र उद्देश्य यही रखा।

निबंध तीन

इस्लाम की सामाजिक व्यवस्था

(Islam Ka Mu'ashrati Nizam)

इस्लाम की सामाजिक व्यवस्था की आधारशिला यह दृष्टिकोण है कि समस्त मानवता एक ही वंश से उतरी है। ईश्वर ने शुरू में एक मानव युगल बनाया — और उस युगल से वे सभी लोग पैदा हुए जो दुनिया को आबाद करते हैं। वे शुरू में एक समुदाय थे — एक भाषा, एक संस्कृति, एक धर्म। लेकिन जैसे-जैसे संख्या बढ़ी, वे पृथ्वी पर फैल गए, और जातियों और जनजातियों की विविधता के कारण उनकी भाषाएँ अलग हो गईं, रहने का तरीका अलग हो गया। यह सब एक प्राकृतिक विविधता है।

इस्लाम मनुष्यों के बीच भेद के किसी भी आधार के रूप में इन सभी को अस्वीकार करता है। कुरआन कहता है: दुनिया के सभी लोग एक माँ और एक पिता की संतान हैं — और मनुष्यों को मनुष्य के रूप में अपनी स्थिति में बराबर होना चाहिए।

सार्वभौमिक मानव भाईचारे की नींव

इस्लाम इस नींव पर एक समाज बनाता है — एक समाज जो पृथ्वी के सभी कोनों में फैल सकता है और मानव मानवता के आधार पर एक सार्वभौमिक भाईचारा स्थापित कर सकता है। हर स्थानीय और राष्ट्रीय समाज की एक सीमा होती है — केवल उस देश या राष्ट्रीयता में पैदा हुए लोग ही शामिल होते हैं। लेकिन इस्लाम की मूलभूत सामाजिक व्यवस्था की ज़रूरत केवल यह है कि एक व्यक्ति एक विश्वास और एक नैतिक ढाँचे को स्वीकार करे। जो इसे स्वीकार करते हैं — चाहे जिस रंग, भाषा या जाति के हों — सभी उस समाज में शामिल होंगे।

उनके बीच खान-पान और बैठने में कोई बाधा नहीं होगी। कोई जन्म या जाति के कारण हीन या श्रेष्ठ नहीं होगा। किसी को वंश या भाईचारे के नाम पर कोई विशेष अधिकार नहीं होगा। उसका अधिकार केवल उसके नैतिकता और चरित्र के कारण होगा।

परिवार: इस्लामी समाज की नींव

मानव समाज की सबसे पहली और सबसे मूलभूत संस्था परिवार है। परिवार एक पुरुष और एक स्त्री के मिलन पर आधारित है। इस मिलन से एक नई पीढ़ी आती है, और इससे एक संबंध नेटवर्क उत्पन्न होता है।

इस्लाम में विवाह की प्रक्रिया सरल है। कुछ विशेष रिश्तेदारों से विवाह वर्जित है। जाति, वंश या जनजाति की परवाह किए बिना सभी मुस्लिम पुरुषों और महिलाओं के बीच विवाह की अनुमति है। मेहर अनिवार्य किया गया है और हल्का रखा गया है। विवाह समारोह की प्रक्रिया सरल है — किसी कोर्ट, काज़ी, नोटरी या रजिस्ट्री कार्यालय की आवश्यकता नहीं। केवल ज़रूरी है कि दो वयस्क गवाहों की उपस्थिति में इजाब और कबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) हो — लेकिन यह सार्वजनिक रूप से हो, गुप्त नहीं।

पड़ोसी और व्यापक समुदाय

इस्लाम ने पड़ोसी को माता-पिता और करीबी रिश्तेदारों के बाद तीसरे सबसे करीबी रिश्ते के रूप में घोषित किया है। पड़ोसी के अधिकारों पर नबी ﷺ का जोर इतना था कि सहाबा को लगा कि पड़ोसी को विरासत में हिस्सा दिया जाएगा।

सामाजिक जीवन के बड़े दायरे के लिए इस्लाम के प्रमुख सिद्धांत:

1. भलाई में और बुराई से रोकने में सहयोग करो — पाप और अत्याचार में सहयोग मत करो। (अल-माइदा: 2)
2. तुम्हारी मित्रता और शत्रुता ईश्वर के लिए होनी चाहिए। (हदीस)
3. तुम वह सर्वश्रेष्ठ उम्मत हो जो मानवता के लिए निकाली गई — तुम्हारा काम भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकना है। (आल-इमरान: 110)
4. आपस में जासूसी मत करो, एक-दूसरे की पीठ मत काटो, एक-दूसरे से बुरा गुमान मत रखो — ईश्वर के भाई बन जाओ। (हदीस)
5. जब तुम्हें पता हो कि किसी पर अत्याचार हो रहा है तो उदासीन मत रहो। (हदीस)
6. अपनी कौम की मदद करो — लेकिन अगर वे खुद ज़ालिम हों तो उन्हें अत्याचार से रोको। (हदीस)
7. दूसरों के लिए वही पसंद करो जो अपने लिए पसंद करते हो। (हदीस)

निबंध चार

सभ्यता के निर्माण में यौन आकर्षण का प्रभाव

(Tamaddun ki Takhleeq mein Sinfi Kashish ka Asar — और Tazyin-e-Ma'ashrat)

मानव सभ्यता में यौन आकर्षण की भूमिका

यह सब किसके लिए है? किसी के लिए? नहीं — प्रकृति ने सुख और आनंद को परम लक्ष्य नहीं बनाया है। उसका उद्देश्य है किसी बड़े कार्य की सेवा के लिए जानवरों और मनुष्यों को बाध्य करना। वह इस सेवा के लिए कुछ सुख और आनंद प्रदान करती है — ताकि यह सेवा की जाए।

इस मामले में प्रकृति का महान उद्देश्य क्या है? जब आप विचार करें, तो समझ में आएगा: प्रकृति मानव प्रजाति की सभ्यता को बनाए रखना और आगे बढ़ाना चाहती है। इसीलिए मानव हृदय में प्रेम और रोमांस की चाहत एक प्रेरक शक्ति के रूप में रखी गई है — जो केवल शारीरिक संपर्क नहीं है बल्कि एक मनोवैज्ञानिक बंधन बनाती है।

इस प्रकार हमने सीखा: यौन तत्वों का यह चुंबकीय मिलन मानव सभ्यता के निर्माण के लिए प्रकृति की प्राथमिक प्रेरक शक्ति है — और मानव प्रजाति के दोनों लिंगों के मिलन से पहचान बनती है — और इस पहचान से सामाजिक जीवन शुरू होता है।

यौन स्वतंत्रता के नुकसान

सामाजिक दृष्टिकोण से, यौन अनुज्ञा — विवाह की सीमाओं को हटाना या कमज़ोर करना — निम्नलिखित गंभीर नुकसान पहुँचाती है:

1. शारीरिक रोग: स्वतंत्र यौन संबंध रोग फैलाते हैं जो न केवल व्यक्तियों को बल्कि समुदायों और आने वाली पीढ़ियों को नुकसान पहुँचाते हैं।
2. नैतिक भ्रष्टाचार: जो व्यक्ति यौन मामलों में बेईमानी, धोखा, और नैतिक कमज़ोरी की आदत विकसित करता है, वह इन आदतों को जीवन के हर क्षेत्र में ले जाता है।

3. महिलाओं का व्यावसायीकरण: एक अनुज्ञाशील समाज अनिवार्य रूप से एक ऐसी महिला वर्ग पैदा करता है जिसका कार्य व्यावसायिक यौन सेवा है।

4. विवाह संस्था का विनाश: जब विवाह के बाहर यौन संतुष्टि स्वतंत्र रूप से उपलब्ध हो, तो विवाह केवल आनंद चाहने वालों के लिए अनावश्यक हो जाता है।

5. सभ्यता की नींव का कमज़ोर होना: अस्थायी और आकस्मिक संबंध पुरुष और महिला के बीच उस स्थायी बंधन को नष्ट कर देते हैं जिस पर पूरी सभ्यता की संरचना टिकी है।

भाग दो: सामाजिक जीवन का सौंदर्यीकरण

(Tazyin-e-Ma'ashrat — क़ुरआन और सुन्नत से संकलित इस्लामी सामाजिक शिष्टाचार)

माता-पिता के साथ व्यवहार

माता-पिता के साथ अच्छा आचरण और शिष्टाचार रखो — इसे मानवीय ख़ुशी का स्रोत मानो — और ईश्वर के बाद माता-पिता का हम पर सबसे अधिक अधिकार है। क़ुरआन कहता है: وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا (बनी इस्राईल: 23) — 'और तुम्हारे रब ने फैसला कर दिया है कि उसके सिवा किसी की बंदगी मत करो, और माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो।'

1. माता-पिता के प्रति ईमानदारी से कृतज्ञ और आभारी रहो — निरंतर कृतज्ञता व्यक्त करते रहो।

2. हमेशा माता-पिता को खुश और प्रसन्न रखने की कोशिश करो। उनसे कभी 'उफ़' भी मत कहो।

3. उनकी सेवा में हृदय और आत्मा से सच्चे और समर्पित रहो — और इसे ईश्वर की प्रसन्नता का साधन समझो।

4. उनकी सेवा के लिए हमेशा उपलब्ध रहो — उन्हें खुश रखने के लिए अपना सारा समय और ऊर्जा लगाओ।

5. माता-पिता के सामने कभी ऐसा काम मत करो जो उन्हें दुख या अपमान पहुँचाए।

6. माता-पिता के मित्रों और संबंधियों के साथ दयालुता और अच्छे व्यवहार से पेश आओ।

7. उनके लिए दुआ करते रहो — رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيَانِي صَغِيرًا।

18. बच्चों की इस्लामी शिक्षा और परवरिश की ज़िम्मेदारी उठाओ। क़ुरआन कहता है: يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا।

19. जब बच्चे सात साल के हो जाएँ तो नमाज़ सिखाओ और मस्जिद ले जाओ।

20. जब बच्चे दस साल के हो जाएँ तो उनके बिस्तर अलग कर दो।

21. बच्चों को हमेशा साफ-सुथरा रखो — सफाई, पवित्रता, साफ कपड़े। अत्यधिक सज-धज और दिखावे से बचो।

अतिथि-सत्कार के नियम

1. अतिथि का अत्यंत आनंद और प्रेम के साथ स्वागत करो — प्रसन्न हृदय, उदारता और सम्मान के साथ। नबी ﷺ ने फरमाया: 'जो लोग अपने मेहमान को आराम नहीं देते — ईश्वर उनसे प्रसन्न नहीं होता।'

2. मेहमान की दुआ पर विशेष ध्यान दो — क्योंकि मेहमान की दुआ ईश्वर के यहाँ स्वीकार होती है।

3. जब मेहमान जाने लगे तो उसे खुशी और गर्मजोशी के साथ विदा करो — अच्छी शुभकामनाओं और दुआ के साथ।

14. यदि तुम किसी के यहाँ ठहरे हो और मेज़बान आराम करे या सो जाए, तो इसे पूरी उदारता और खुले दिल से लो।

15. मेहमान की दुआ माँगो — ईश्वर की उपस्थिति खोजो और उनके लिए दुआ माँगो। नबी ﷺ ने फरमाया: اللهم بارك لهم وارزقهم وارحمهم।

यही इस्लाम की सामाजिक जीवन के लिए संपूर्ण मार्गदर्शिका है: कि प्रत्येक मानवीय संबंध — माता-पिता, जीवनसाथी, बच्चों, पड़ोसियों, मित्रों और मेहमानों के साथ — प्रेम, न्याय, जिम्मेदारी और ईश्वर की चेतना की एक ही भावना से शासित हो।

— हिंदी अनुवाद समाप्त —